2026

MPPSC

MADHYA PRADESH

STATE FOREST SERVICE

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

Module - 1

मध्यप्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य : ◈ पूर्वमध्य काल और मध्य प्रदेश ◈ मध्य प्रदेश में राजपूत राजवंश ◈ मध्य प्रदेश में सल्तनत एवं स्वतंत्र मुस्लिम सत्ता ◈ गढ़ा का गोंड राज्य ◈ बुन्देला राजवंश ◈ बघेल वंश ◈ मध्य प्रदेश में मराठा गतिविधियां ◈ भोपाल रियासत

Hornbill Classes

MPPSC STATE FOREST SERVICE 2023

Rank – 1
Shashank Jain
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Jyoti Thakur
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 4
Shivam Gautam
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 5
Nitin Patel
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Ravi Kumar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 7
Ankur Gupta
Comprehensive Forestry Course

Rank – 8
Deependra Lodhi
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank – 9
Kapil Chauhan
Comprehensive Forestry Course

Rank – 10
Alok Kumar Jhariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 11
Tarun Chouhan
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 12
Raghvendra Thakur
Comprehensive Forestry Course + Test S. + CIGP

11 Out of **12** Total Selections in
Assistant Conservator of Forest (ACF) 2023

108 Out of **126** Total Selections in
Range Forest Officer (RFO) 2023

Rank – 1
Arvind Ahirwar
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 2
Pushpendra Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 3
Narendra Gunare
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank – 4
Jitendra Kumar Verma
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 5
Jaishrish Barethiya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 6
Bhavna Sehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 7
Pradeep Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 8
Anil Kumar Gour
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank – 9
Aakash Kumar Malviya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 11
Rajesh Kumar Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 12
Veerendra Prajapati
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 13
Dinesh Kumar
Test Series

Rank - 14
Niranjan Dehariya
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 15
Abhinay Chouhan
Test Series

Rank - 18
Sher Singh Ahirwar
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 19
Pradeep Jatav
Comprehensive Forestry Course + CIGP

Rank - 21
Amit Sisodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 22
Abhishek Barodiya
Comprehensive Interview Guidance Programme

Rank - 24
Golu Goyal
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

Rank - 25
Pawan Raje
Comprehensive Interview Guidance Programme + Test Series

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

MODULE – 1

EDITION : 2026

+917223970423 **Hornbillclasses.com**

Gole ka mandir, Morar, Gwalior (MP) 474005

SYLLABUS

Unit	Syllabus
MPPSC (Pre) **Unit - 2**	**History, Culture and Literature of Madhya Pradesh** : Major Events of Medieval era Madhya Pradesh and Major Dynasties of Madhya Pradesh. **मध्यप्रदेश का इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य** : मध्यप्रदेश के मध्यकालीन इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ, प्रमुख राजवंश।
MPPSC Forest (Main) **Section (A)** **Unit - 1**	**History of Madhya Pradesh** : Medieval History of Madhya Pradesh. **मध्यप्रदेश का इतिहास :** मध्यप्रदेश का मध्यकालीन इतिहास।

Copyright © by Hornbill classes

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored, or transmitted in any form or by any electronic, photocopying, recording, or otherwise, without prior permission of Hornbill classes.

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक व सामग्री आपके व्यक्तिगत उपयोग के लिये प्रदान की गई है और इसे आपके व्यक्तिगत Contact No. से Watermark किया गया है। इस पुस्तक को किसी अन्य व्यक्ति / संस्था / समूह के साथ साझा करना, फोटो कॉपी कराना आदि पूर्णत: वर्जित है, यदि आप इस प्रकार की किसी भी गतिविधि में सम्मिलित पाये जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में आपका Registration समाप्त कर दिया जायेगा और आपके विरूद्ध उचित दण्डात्मक कार्यवाही की जायेगी।

Module - 1

CONTENTS

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास		
1.	पूर्वमध्य काल और मध्य प्रदेश	1 – 8
2.	मध्य प्रदेश में राजपूत राजवंश	9 – 26
3.	मध्य प्रदेश में सल्तनत एवं स्वतंत्र मुस्लिम सत्ता	27 – 39
4.	गढ़ा का गोंड राज्य	40 – 48
5.	बुन्देला राजवंश	49 – 59
6.	बघेल वंश	60 – 67
7.	मध्य प्रदेश में मराठा गतिविधियां	68 – 78
8.	भोपाल रियासत	79 – 86
9.	MCQs	87 – 92

CHAPTER

1

पूर्वमध्य काल और मध्य प्रदेश

पूर्वमध्यकाल (लगभग 600 ई. से 1200 ई.) भारतीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण चरण है, जब प्राचीन युग की राजनीतिक संरचनायें क्षीण होकर क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। इस काल में मध्यप्रदेश, जिसे ऐतिहासिक रूप से मालवा, विदिशा, बघेलखंड और छिंदवाड़ा–गोंडवाना क्षेत्रों के रूप में जाना जाता था, अनेक प्रमुख राजवंशों का केंद्र रहा।

सबसे पहले **वाकाटक, नाग, औलिकर और परिव्राजक** जैसे वंशों ने मध्यप्रदेश में अपनी सत्ता स्थापित की। इसी काल में **क्षेत्रीय भाषाओं का विकास** हुआ और **संस्कृत साहित्य को भी राजाश्रय** मिला। **राजनीतिक दृष्टि** से यह युग **विकेन्द्रीकरण** का था, पर **सांस्कृतिक रूप से मध्यप्रदेश ने भारतीय सभ्यता को नई ऊँचाइयाँ** दीं। इस प्रकार पूर्वमध्यकालीन मध्यप्रदेश न केवल राजनीतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा, बल्कि कला, धर्म और संस्कृति का जीवंत केंद्र भी बना।

1.1 वाकाटक वंश :

वाकाटकों का इतिहास अजय मित्र शास्त्री तथा वासुदेव मिरासी के लेखों, विभिन्न अभिलेखों और पुराण जैसे साहित्यिक स्रोतों पर आधारित है। उनका मूल निवास स्थान विवादास्पद है। कुछ विद्वानों के अनुसार वे दक्षिण भारत के थे। इस मत का आधार अमरावती से प्राप्त एक विच्छिन्न अभिलेख पर उत्कीर्ण "वाकाटक" शब्द, वाकाटक तथा पल्लव शासक शिवस्कन्दवर्मन के हीरेहदगल्ली और माइडावोलू अभिलेखों की समान शब्दावली है। विंध्यशक्ति-II की बासिम पट्टिकाओं में प्रवरसेन-I को ***हारीतिपुत्र*** और सर्वसेन-I को ***धर्ममहाराज*** कहा गया है।

अजय मित्र शास्त्री (1997) के अनुसार, वाकाटक वंश का प्रारंभिक क्षेत्र नर्मदा के उत्तर में स्थित **विंध्य क्षेत्र** था, जिसे पुराणों में ***विंध्यक****** कहा गया है। पुराणों में प्रारंभिक शासक **प्रवरसेन-I** का उल्लेख **कञ्चानक नामक नगर** से जुड़ा है, जिसे आधुनिक मध्यप्रदेश के **पन्ना जिले के नाचना या नचना-की-तलाई** गाँव से पहचाना गया है। यहाँ से वाकाटकों के कई प्रारंभिक **अभिलेख और संरचनायें** प्राप्त हुई हैं। इन तथ्यों से सिद्ध होता है कि वाकाटक प्रारंभ में विंध्य क्षेत्र (बुंदेलखंड व बघेलखंड सहित) में स्थापित हुये और बाद में दक्षिण की ओर विस्तार करते हुये दक्कन की प्रमुख राजनीतिक शक्ति बने। उनका शासन तीसरी शताब्दी ई. के मध्य से पाँचवीं शताब्दी के अंत / छठी शताब्दी की शुरुआत तक रहा। वाकाटकों के वैवाहिक संबंध गुप्तों, पद्मावती के नागों, कर्नाटक के कदम्बों और आंध्र के विष्णुकुण्डिनों से थे।

राजनीतिक इतिहास एवं शाखाएं :

- पुराणों के अनुसार **विंध्यशक्ति-I (250-270 ईस्वी)** वाकाटक वंश का **संस्थापक** था। **अजन्ता अभिलेख** (हरिषेण कालीन) में उसकी **सैन्य शक्तियों** का काव्यात्मक वर्णन है कि उसके घोड़ों की धूल से सूर्य ढक गया और उसने अपनी भुजाबल से पृथ्वी जीती। उसकी तुलना **इन्द्र (पुरंदर)** और **विष्णु (उपेन्द्र)** से की गई है। उसे **द्विज***** कहा गया है, और वाकाटक अभिलेखों में इनके शासक **विष्णुवृद्ध गोत्रीय ब्राह्मण** बताये गये हैं।
- **प्रवरसेन-I (पुराणों में प्रवीर)** दूसरा शासक था, जिसने 270 ईस्वी से 330 ईस्वी तक शासन किया। उसने राज्य को विदर्भ और दक्कन तक विस्तारित किया, और उसकी **राजधानी कञ्चानक** (आधुनिक नाचना) थी। एक अभियान के द्वारा उसने नागों की राजधानी **पुरिका नगरी (संभवत: विदिशा)** पर अधिकार कर लिया और यहीं से शासन का संचालन प्रारंभ हुआ।

CHAPTER 2

मध्य प्रदेश में राजपूत राजवंश

मध्यप्रदेश का **मध्यकालीन इतिहास राजपूत शक्ति और संस्कृति के उत्कर्ष का साक्षी** है। गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् जब भारत में अनेक क्षेत्रीय राजवंश उभरे, तब मध्यप्रदेश में भी राजपूत वंशों ने अपनी मजबूत सत्ता स्थापित की। इन राजाओं ने न केवल सीमाओं की रक्षा की, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी योगदान दिया।

मालवा, बुंदेलखंड और बघेलखंड जैसे क्षेत्रों में अलग-अलग राजपूत वंशों का प्रभुत्व रहा। **परमार वंश** ने मालवा को राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बनाया, जबकि **चंदेल वंश** ने बुंदेलखंड में स्थापत्य कला की अद्भुत परंपरा विकसित की। खजुराहो के मंदिर इस काल की कला-सिद्धि के प्रतीक हैं। **कलचुरी शासक** त्रिपुरी से शासन करते हुये मध्यप्रदेश में प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते रहे।

इन वंशों के काल में किलों, मंदिरों और नगरों का निर्माण बढ़ा, जिससे क्षेत्र की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ। राजपूत शासन ने मध्यप्रदेश को सामरिक स्थिरता, सांस्कृतिक गौरव और कलात्मक पहचान प्रदान की। इस प्रकार, राजपूत राजवंशों ने मध्यप्रदेश को **राजनीतिक शक्ति और सांस्कृतिक वैभव**; दोनों दृष्टियों से समृद्ध युग प्रदान किया।

2.1 चंदेल वंश :

मध्यभारत के इतिहास में चंदेल वंश का विशेष महत्व रहा है। इस वंश ने प्रतिहारों के पतन के पश्चात **जेजाकभुक्ति (बुंदेलखंड)** पर नवीं शताब्दी ई. के प्रारंभ से लेकर चौदहवीं शताब्दी ई. के आरंभ तक शासन किया। लोक मान्यताओं के अनुसार इनका मूल निवास स्थान छतरपुर जिले में **मनियागढ़** था, जहां इनकी **कुलदेवी माता मनिया देवी***** का मंदिर भी था। इस वंश का **प्रथम शासक नन्नुक***** था, जिसने लगभग 831 ई. के आसपास चंदेल सत्ता की आधारशिला रखी। जनश्रुतियों के अनुसार चंदेल वंश का **संस्थापक चन्द्रवर्मा*** था, जिसे **चंद्रात्रेय ऋषि का वंशज*** माना गया है। अधिकांश विद्वान नन्नुक और चन्द्रवर्मा को एक ही व्यक्ति मानते हैं।

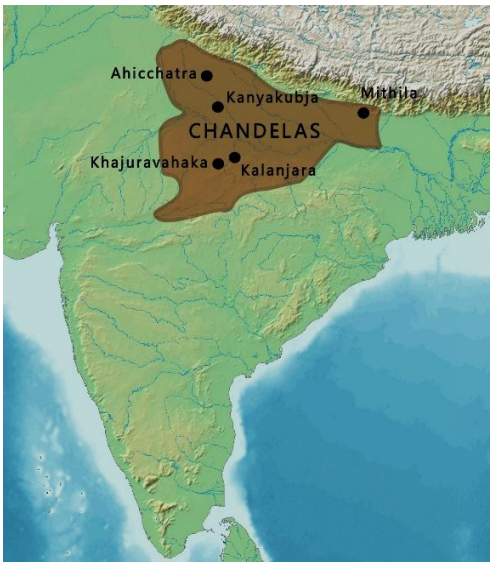

यशोवर्मन के पौत्र देवलब्धि के दूददही/दूधी अभिलेख में वंश के संस्थापक का उल्लेख **चंद्रल्लावय***** नाम से हुआ है। वहीं कीर्तिवर्मन के देवगढ़ शिलालेख और पृथ्वीराज चौहान के अभिलेखों में "चंदेल" शब्द का प्रयोग मिलता है, जो इस वंश की पहचान को ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित करता है। **अरब इतिहासकार अल-कामिल** ने भी चंदेलों का संबंध **कजुराह (खजुराहो)** से बताया है, जो उनके सांस्कृतिक और स्थापत्य वैभव का प्रमाण है।

इस प्रकार, नन्नुक से आरंभ हुआ चंदेल वंश न केवल बुंदेलखंड की राजनीतिक शक्ति का प्रतीक बना, बल्कि उसने खजुराहो जैसे अद्वितीय कला-केंद्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को अमर गौरव प्रदान किया।

राजनीतिक इतिहास : प्रारंभिक शासक

- खजुराहो के **लक्ष्मण मंदिर अभिलेख (उत्कीर्णन – यशोवर्मा)** से ज्ञात होता है कि **नन्नुक का पराक्रम** इतना प्रसिद्ध था कि उसके शत्रु भी उसकी आज्ञा को **पुष्पहार की भांति** आदरपूर्वक स्वीकारते थे। यद्यपि यह प्रशस्ति काव्यात्मक है, फिर भी नन्नुक को 'नृप', 'नृपति' और 'महीपति' जैसे विरुदों से संबोधित किया गया, जो उसके राजनीतिक प्रभाव और स्वतंत्र सत्ता के संकेतक हैं।

CHAPTER

3

मध्य प्रदेश में सल्तनत एवं स्वतंत्र मुस्लिम सत्ता

वर्तमान मध्यप्रदेश का इतिहास **तेरहवीं सदी से सत्ता परिवर्तनों और संघर्षों के एक नये दौर में प्रवेश** करता है। इस काल में उत्तर भारत में दिल्ली में **इलबारी तुर्कों की सत्ता स्थापित** हुई, जिन्होंने दिल्ली को केंद्र बनाकर आस-पास के पतनशील राजपूत राज्यों पर विजय अभियान प्रारंभ किया। इन आक्रमणों का प्रभाव शीघ्र ही चंबल घाटी, ग्वालियर और उसके पश्चात् मालवा क्षेत्र तक पहुँच गया।

तेरहवीं सदी में मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित प्रतीहार, परमार और चंदेल जैसे राजवंश **दिल्ली के सुल्तानों के आक्रमणों से प्रभावित** हुये। चौदहवीं सदी तक दिल्ली सल्तनों की शक्ति का प्रसार मध्यप्रदेश के अनेक भागों तक हो गया। इसी समय **सतपुड़ा क्षेत्र में चोरला नामक एक राजपूत राज्य** का उदय हुआ, जिसने शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों के बीच लंबे समय तक अपनी स्वतंत्रता बनाये रखी।

तेरहवीं और चौदहवीं सदियाँ निरंतर सत्ता-संघर्ष की सदियाँ रहीं, जो आगे आने वाली दो शताब्दियों तक जारी रही। पन्द्रहवीं सदी में दिल्ली सल्तनत के विघटन के साथ मध्यप्रदेश में **तीन प्रमुख क्षेत्रीय राज्य** उभरे – **मालवा में गौरी और खिलजी वंश** का राज्य, **ग्वालियर-चंबल में तोमर सत्ता**, और **दक्षिणी मध्यप्रदेश में गढ़ा का गोंड राज्य**। ये तीनों शक्तियाँ मुगल साम्राज्य की स्थापना तक राजनीतिक रूप से सक्रिय रहीं।

3.1 मध्यप्रदेश में ग़ुलाम वंश :

शिहाबुद्दीन गोरी के भारतीय आक्रमणों की श्रृंखला में **1195 ई. का अभियान** विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था। इस वर्ष शिहाबुद्दीन गोरी ने अपने प्रमुख सेनापति **कुतुबुद्दीन ऐबक** तथा **तुगरिल** के साथ मिलकर त्रिभुवनगढ़ (राजस्थान) पर आक्रमण किया। उस समय वहाँ यदुवंशी शासक कुमारपाल शासन कर रहा था, जो राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से कमजोर सिद्ध हुआ। परिणामस्वरूप कुमारपाल ने बिना किसी बड़े प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। इस विजय के पश्चात गोरी ने **तुगरिल** को त्रिभुवनगढ़ का प्रशासक नियुक्त किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गोरी केवल लूट तक सीमित न रहकर प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करने की नीति अपना रहा था।

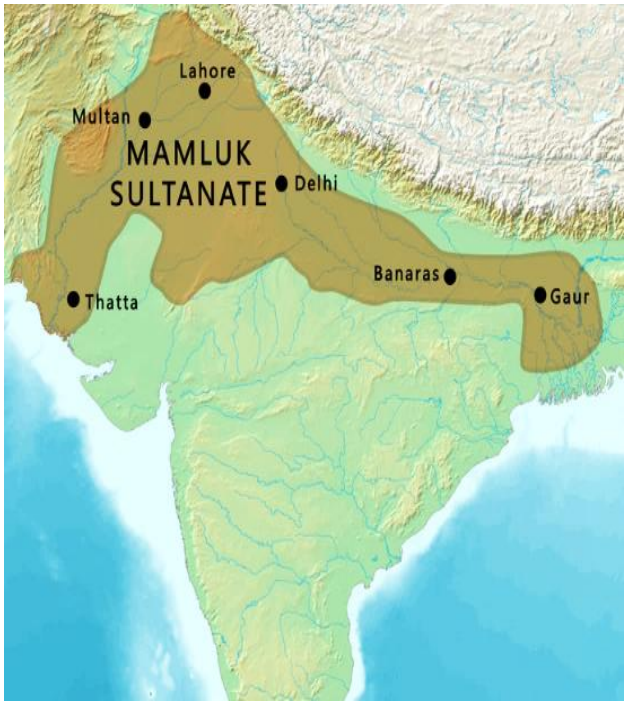

इसके बाद 1195–1196 ई. में शिहाबुद्दीन गोरी ने मध्य भारत के सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ग्वालियर दुर्ग पर आक्रमण किया। उस समय ग्वालियर पर प्रतिहार वंश के शासक **सुलक्षणपाल** का अधिकार था। गोरी की सैन्य शक्ति के आगे सुलक्षणपाल टिक न सका और उसने आत्मसमर्पण कर दिया। अपनी अधीनता के प्रतीकस्वरूप सुलक्षणपाल ने गोरी को दस हाथी भेंट किये। बाद में तुगरिल ने भी ग्वालियर पर आक्रमण किया और सुलक्षणपाल से संधि की। इस संधि के अनुसार ग्वालियर दुर्ग का नियंत्रण कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप दिया गया, जिससे गोरी शासन की पकड़ और अधिक सुदृढ़ हो गई।

कुतुबुद्दीन ऐबक

- **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने 1196–97 ई. में **मालवा पर अपना पहला स्वतंत्र आक्रमण** किया। इस अभियान के दौरान उसने उज्जैन में

CHAPTER 4

गढ़ा का गोंड राज्य

4.1 गढ़ा का गोंड राज्य :

सतपुड़ा की उपत्यकाएँ सघन वनों व पर्वतों के कारण प्राचीनकाल से दुर्गम रहीं, इसलिए इस क्षेत्र का ऐतिहासिक विवरण दुर्लभ है। यह उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक प्राकृतिक दीवार जैसा रहा, जिस पर दोनों की राजनीति का कम प्रभाव पड़ा; और यदि कभी आधिपत्य रहा भी तो प्रभावी नहीं रहा। कलचुरियों और चन्देलों के पतन के बाद यहाँ दो शताब्दियों तक कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं रही, जिसे इतिहासकार प्रायः **अंधकार का युग** कहते हैं। परंतु **गोंड राजाओं द्वारा एक सुदृढ़ राज्य स्थापित** किया, जो काफी समय तक बना रहा।

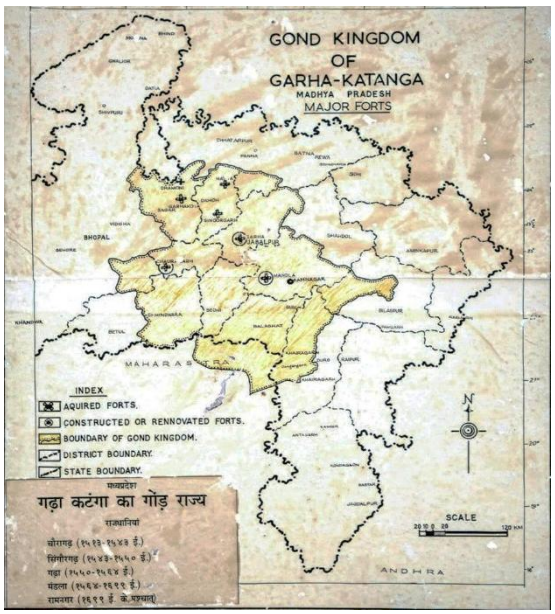

यह राज्य समय-समय पर **गढ़ा, गढ़ा-कटंगा** और **गढ़ा-मण्डला** कहलाया। फारसी तथा हिन्दी-संस्कृत स्रोत इसे गढ़ा राज्य कहते हैं, जबकि *अकबरनामा* जैसे कुछ स्रोत गढ़ा-कटंगा कहते हैं। लगभग 1700 ई. में गोंड राजा नरेन्द्रशाह ने रामनगर से राजधानी हटाकर मण्डला स्थानांतरित की तो यह गढ़ा-मण्डला कहलाया। अठारहवीं शती के मराठी और अंग्रेजी स्रोतों में भी इसे गढ़ा-मण्डला ही कहकर पुकारा गया है।

गढ़ा राज्य के शासकों की जानकारी कई विश्वसनीय स्रोतों से मिलती है, जैसे – रामनगर का **संस्कृत शिलालेख*****, कर्नल **विलियम स्लीमन** का **विवरण**, कैप्टन वार्ड की **मंडला जिला रिपोर्ट**, तथा संस्कृत ग्रंथ ***गढ़ेशनृपवर्णनम्***। अनुश्रुतियों व रामनगर शिलालेख के अनुसार इस वंश के संस्थापक **यादोराय (जदूराय)***** माने जाते हैं। मुगल स्रोत *अकबरनामा* में खरजी, गोरक्षदास, सुखनदास, अर्जुनदास और **संग्रामशाह** जैसे शासकों का उल्लेख मिलता है, जो इस वंश की **क्रमिक वंशावली** को दर्शाता है।

आम्हणदास/ संग्रामशाह

- इस वंश के सर्वाधिक प्रतापी शासक **आम्हणदास (संग्रामशाह)** थे। ठर्रका (दमोह) के सती-लेख से ज्ञात होता है कि आम्हणदास 1510–1513 ई. के बीच सत्ता में आए।
- संग्रामशाह के सिक्कों में उसे **पुलत्स्यवंशी** कहा गया है। यह उल्लेख महत्वपूर्ण है, क्योंकि पुलत्स्य ऋषि के पुत्र रावण माने जाते हैं और गोंड शासक स्वयं को **रावणवंशी** भी कहते हैं। अतः गढ़ा के शासकों को गोंड मूल का माना जा सकता है।
- **1516 ई.** का संग्रामशाह का नाम अंकित सबसे प्राचीन सिक्का यह संकेत देता है कि आम्हणदास ने इसी काल में **संग्रामशाह की पदवी धारण** कर ली थी। जबकि **अबुलफ़ज़ल** के अनुसार **1531 ई. में रायसेन विजय** के अवसर पर **गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह** की सहायता के फलस्वरूप आम्हणदास को यह उपाधि प्रदान की गई। किंतु सिक्कों के प्रामाणिक साक्ष्य के सम्मुख, अबुलफ़ज़ल का यह कथन स्वीकार्य नहीं प्रतीत होता।
- **रामनगर शिलालेख, *गढ़ेशनृपवर्णनम्* और स्लीमन**, तीनों स्रोत इस बात की पुष्टि करते हैं कि **संग्रामशाह के अधीन 52 गढ़***** थे, जो उनकी व्यापक राजनीतिक शक्ति का प्रमाण है। अबुलफज़ल के वर्णन और 52 गढ़ों के परीक्षण से निष्कर्ष निकलता है कि संग्रामशाह के समय गढ़ा राज्य में वर्तमान रायसेन, हरदा, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, जबलपुर, कटनी, सागर, दमोह, सिवनी, छिंदवाड़ा, बालाघाट,

CHAPTER

5

बुन्देला राजवंश

बुन्देला वंश का उत्कर्ष भारत के केन्द्रीय भाग में हुआ, जिसमें वर्तमान **मध्य प्रदेश** और **उत्तर प्रदेश** के विस्तृत क्षेत्र सम्मिलित थे। मध्यकाल में देश के केन्द्रीय भाग के इस भू-भाग को **बुन्देलखण्ड** कहा जाता था। भाषा, रहन-सहन, खान-पान, लोकाचार, रीतिरिवाज और परम्पराओं की दृष्टि से यह क्षेत्र आज भी बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है। भौगोलिक रूप से यह पथरीली चट्टानों, घने वनों, पर्वत श्रृंखलाओं तथा वर्षा में वेग से बहने वाली नदियों-नालों का क्षेत्र था, जहाँ धौ, महुआ, छिवला और काँटेदार झाड़ियों के वन प्रचुर मात्रा में पाये जाते थे। मध्यकालीन बुन्देलखण्ड की सीमायें उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में टोंस और पश्चिम में चम्बल नदियों तक मानी जाती थीं; जिसे **प्रतिपाल सिंह** ने अपनी पुस्तक *बुन्देलखण्ड का इतिहास* में इस प्रकार बताया है – "***इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस। छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू होंस।***"

उद्भव और वंश परंपरा

बुन्देला वंश की उत्पत्ति परंपरागत रूप से भगवान **श्रीराम** के ज्येष्ठ पुत्र **लव** के वंश से मानी जाती है। आठवीं शताब्दी में **काशी के राजा कर्तराज** के वंशज **ग्रहनिवार** कहलाये, जो आगे चलकर **गहिरबार** कहे गये। इसी वंश के पंचम बुन्देला के पुत्र **वीर बुन्देला** ने 13वीं शताब्दी के मध्य **मऊ-माहोनी** (पहूज नदी के किनारे, जालौन–भिण्ड सीमा क्षेत्र) को **राजधानी** बनाकर बुन्देलखण्ड में राज्य स्थापित किया। उसके नाती **अर्जुन पाल** ने आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार कर राज्य को सुदृढ़ किया।

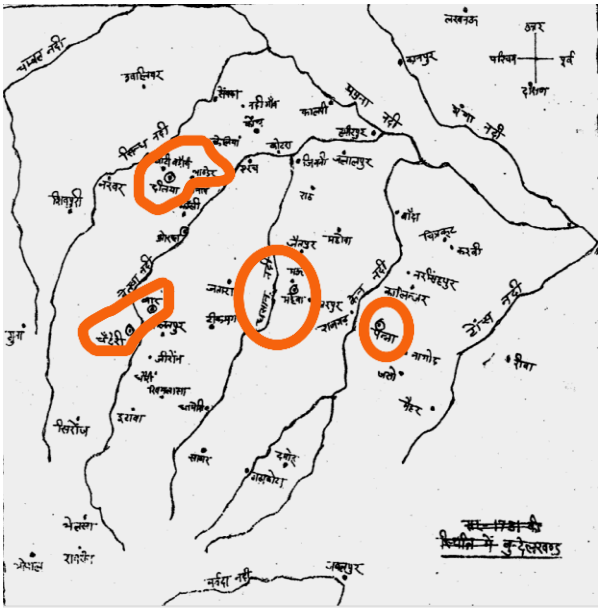

बुंदेला राज्यों का मानचित्र

अधिकांश विद्वानों के अनुसार विन्ध्य क्षेत्र (**विन्ध्याटवी**) में राज्य स्थापित करने के कारण ये पहले **विन्ध्येला** और बाद में **बुन्देला** कहलाये; उनके राज्य-क्षेत्र के कारण ही यह भूभाग आगे चलकर **बुन्देलखण्ड** कहलाया, और 14वीं सदी के अंत तक *जेजाकभुक्ति* के स्थान पर यही नाम प्रचलित हो गया।

वंशानुक्रम में **अर्जुनपाल बुन्देला के तीन पुत्रों वीरपाल, सोहनपाल, दयापाल** का उल्लेख मिलता है। अर्जुनपाल की मृत्यु के बाद ज्येष्ठ पुत्र **वीरपाल** मऊ-माहोनी का शासक बना और उसने सोहनपाल व दयापाल को वहाँ से निष्कासित कर दिया। **महत्वाकांक्षी सोहनपाल** ने स्वतंत्र राज्य हेतु बेतवा नदी के समीप स्थित **गढ़कुड़ार** (मऊ-माहोनी से लगभग 100 किमी पूर्व) के **खंगार शासक हुरमतसिंह** से सहायता माँगी, परंतु शर्तों के कारण उन दोनों के बीच विवाद हो गया।

तेरहवीं सदी के मध्यकाल में **पवाया के शासक पुन्यपाल परमार और शाहबाद के शासक मुकुटमणि धंधेरा (चौहान)** के सहयोग से **सोहनपाल** ने कूटनीति द्वारा **हुरमतसिंह को मारकर गढ़कुड़ार का खंगार राज्य समाप्त** किया। यह **बुन्देले-परमार-धंधेरे ठाकुरों** का गठजोड़ '**तीन कुरी के ठाकुर**' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और वैवाहिक संबंधों से सुदृढ़ बना। इसके बाद सहजेन्द्र, नानकदेव, पृथ्वीराज, रामचंद, मेदनीमल, अर्जुनदेव और मलखानसिंह बुन्देला गढ़कुड़ार से ही शासन करते रहे। आगे चलकर बुंदेलों ने विभिन्न शाखाओं की स्थापना की, जिनमें – ओरछा, बार चँदेरी, दतिया तथा पन्ना प्रमुख हैं।

CHAPTER 6

बघेल वंश

बघेलखण्ड का भू-भाग प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण रहा है। यह क्षेत्र **पहाड़ों, घाटियों और कंदराओं से युक्त** होने के साथ-साथ घने जंगलों से आच्छादित था, जिसके कारण यहाँ विभिन्न प्रकार के वन्य जीवों का निवास रहा। भौगोलिक दृष्टि से इसकी **दुर्गम संरचना** ने यहाँ की **संस्कृति, जीवनशैली और ऐतिहासिक विकास को विशेष रूप से प्रभावित** किया। धार्मिक महत्त्व की दृष्टि से अमरकंटक इस क्षेत्र का प्रमुख तीर्थस्थल है, जहाँ से **नर्मदा नदी का उद्गम** होता है। पुराणों में नर्मदा को **रेवा** नाम से संबोधित किया गया है, इसी कारण इस क्षेत्र को **रेवाखण्ड** कहा गया। बाद में इसी 'रेवा' नाम से रीवा नगर की स्थापना हुई, जहाँ बघेल शासक विक्रमाजीत (1605–1624 ई.) ने अपनी राजधानी स्थापित कर क्षेत्र के राजनीतिक महत्व को और सुदृढ़ किया।

बघेल राजवंश का क्षेत्रीय विस्तार मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित था, जो **छत्तीसगढ़** और **उत्तर प्रदेश** से लगा हुआ था। प्राकृतिक दृष्टि से इस क्षेत्र को तीन भौगोलिक भागों में विभाजित किया जाता है – **तरिहार**, **उपरिहार** और **पहाड़-डहार**। **तरिहार** क्षेत्र निचले मैदान का प्रतिनिधित्व करता था। यह विंध्य पर्वतमाला के उत्तर में स्थित था और गंगा–यमुना दोआब से जुड़ा हुआ क्षेत्र था। **उपरिहार** अपेक्षाकृत ऊँचा मैदान था, जो कैमोर पर्वत श्रृंखला के समीप फैला हुआ था। **पहाड़-डहार** क्षेत्र कैमोर पर्वत के दक्षिण में स्थित था और इसमें अमरकंटक के आसपास का पर्वतीय भू-भाग सम्मिलित था।

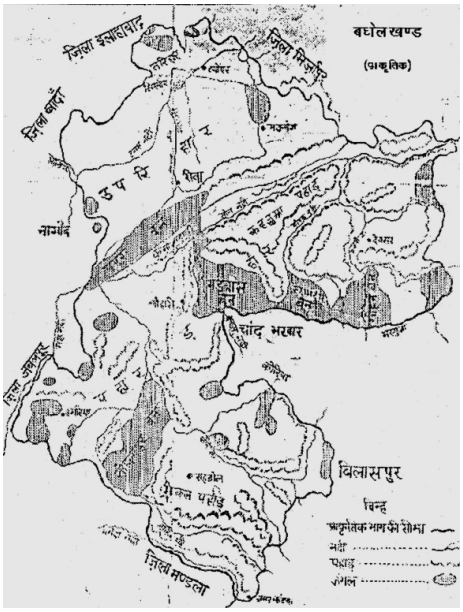

बघेलखण्ड प्राकृतिक

बघेल वंश का अभ्युदय

बघेल सत्ता के उत्कर्ष की पृष्ठभूमि 13वीं शताब्दी के प्रारंभ में तैयार हुई। इस काल में **चंदेल** और **कलचुरी** शासकों के पतन के कारण उनके अधीनस्थ क्षेत्रों में राजनीतिक शून्यता उत्पन्न हो गई। इस स्थिति का लाभ उठाकर अनेक स्थानीय छोटे राजवंशों ने उन क्षेत्रों पर अपना अधिकार करना आरंभ किया और इसी प्रक्रिया के अंतर्गत **बघेल राजवंश का उदय** हुआ। संस्कृत ग्रंथ *वीरभानुदय काव्यम्* (रचनाकार – कवि माधव उरव्य), में व्याघ्रदेव को **व्याघ्रपाद मुनि** कहकर संबोधित किया गया है तथा रीवा के बघेलों को व्याघ्रपाद मुनि का वंशज बताया गया है।

बघेल मूलतः चौलुक्य (सोलंकी) वंश से माने जाते हैं। अन्हिलवाड़ा (गुजरात) के शासक **कुमारपाल ने अर्णोराज को व्याघ्रपल्ली (बघेलबारी) की सामंती** और मंत्री पद दिया, जिसके **वंशज 'व्याघ्रपल्लीय'** कहलाये और कालांतर में **बघेल** नाम प्रचलित हुआ। अर्णोराज के पुत्र **लवण प्रसाद (व्याघ्रदेव) को बघेलखण्ड परंपरा में मूल पुरुष** माना गया है। जनश्रुति के अनुसार व्याघ्रदेव एवं उनके पौत्र बीसलदेव और भीमलदेव, तीर्थयात्रा के दौरान कालिंजर पहुँचे। यहाँ **भर राजा** के आग्रह पर उन्होंने **विद्रोही लोधी सामंत का षड्यंत्रपूर्वक अंत** किया। इससे प्रसन्न होकर **भर राजा ने उन्हें 'ठाकुर' की उपाधि देकर गहोरा की सामंती प्रदान** की।

इस प्रकार **1236 ई.** में **गहोरा को केंद्र बनाकर बघेल राजवंश की औपचारिक स्थापना***** की गई। बीसलदेव अपने छोटे भाई भीमलदेव को गहोरा की सत्ता सौंप कर वापस गुजरात चला गया।

6.1 गहोरा के बघेल :

- **गहोरा के बघेल शासक** बघेल वंश के राजनीतिक उत्कर्ष के प्रमुख प्रतिनिधि थे। भीमलदेव के पुत्र **अनीकदेव**, जिन्हें **रानिंगदेव** के नाम से भी जाना जाता है, ने गहोरा के क्षेत्र का विस्तार कर एक संगठित राज्य की स्थापना की। संस्कृत काव्य-ग्रंथ *वीरभानुदय काव्यम्*

CHAPTER 7

मध्य प्रदेश में मराठा गतिविधियां

अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में **मुगल साम्राज्य की शक्ति के क्षीण** होने के साथ ही मध्य भारत के राजनीतिक परिदृश्य में निर्णायक परिवर्तन दिखाई देता है। इसी संक्रमणकाल में **मराठों का मध्य प्रदेश में आगमन** हुआ, जिसने क्षेत्रीय सत्ता-संतुलन को नई दिशा दी। दक्कन से उत्तर की ओर बढ़ते हुये मराठों ने नर्मदा घाटी, मालवा और बुंदेलखंड को अपने प्रभाव क्षेत्र में सम्मिलित किया। सैन्य अभियानों, चौथ–सरदेशमुखी की व्यवस्था तथा प्रशासनिक हस्तक्षेप के माध्यम से उन्होंने यहाँ स्थायी शासन स्थापित किया। मराठों का यह आगमन न केवल राजनीतिक परिवर्तन का संकेत था, बल्कि मध्य प्रदेश के **सामाजिक और आर्थिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव** डालने वाला सिद्ध हुआ।

7.1 मराठों का मालवा आगमन :

मध्यप्रदेश में मराठों के आगमन की पृष्ठभूमि छत्रपति **राजाराम** (1688–1700 ई.) के काल में उस समय निर्मित हुई, जब मराठे बरार, खानदेश तथा नर्मदा नदी को पार कर चुके थे। दक्षिण से उत्तर की ओर अपने **स्वराज्य को साम्राज्य का रूप देने के उद्देश्य** से मराठों ने मुगल साम्राज्य पर निरंतर प्रहार आरंभ किये, जिसे '**मुलुखगिरी**' कहा गया। इस संदर्भ में इतिहासकार **सर जॉन मालकम** का उल्लेख महत्वपूर्ण है, जिनके अनुसार 1690 से 1696 ई. के बीच मराठा दल मालवा क्षेत्र में घुसपैठ करते हुये मांडू तक पहुँच गये थे। इसके बाद **1699 ई. में कृष्णा सावंत** ने लगभग 15 हजार सैनिकों के साथ नर्मदा नदी पार कर मालवा में प्रवेश किया, जिससे इस क्षेत्र में मराठा गतिविधियाँ और अधिक सशक्त हो गईं।

पेशवा बाजीराव प्रथम की मध्य भारत में गतिविधियां

- अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में **पेशवा बाजीराव प्रथम** की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई। 1721 ई. में उन्होंने मराठा सेना को मालवा भेजा, जबकि उसी समय 1722 ई. में मुगल शासन की ओर से **गिरिधर बहादुर** को **मालवा का सूबेदार** नियुक्त किया गया।
- 1723 ई. में बाजीराव प्रथम बुरहानपुर के मार्ग से हँडिया पहुँचे, परंतु शीघ्र ही वापस लौट गये। इसके बाद मई 1723 ई. में उन्होंने होशंगाबाद के मार्ग से पुनः मालवा में अभियान आरंभ किया, जिसमें भोपाल के नवाब **दोस्त मुहम्मद खान** को पराजित किया। इस विजय के परिणामस्वरूप मराठों का नर्मदा के दक्षिणी भाग तथा खानदेश पर अधिकार स्थापित हो गया।
- मराठा प्रभुत्व को और सुदृढ़ करने के लिये 1724 ई. में उदाजी पवार को धार और झाबुआ का मोकासा प्रदान किया गया, जबकि इंदौर क्षेत्र पेशवा के भाई **चिमणाजी अप्पा** को सेना रखने के उद्देश्य से सौंपा गया।
- इस संघर्ष का निर्णायक चरण नवम्बर 1728 ई. में **अमझेरा के युद्ध** में सामने आया, जहाँ चिमणाजी अप्पा ने उदाजी पवार और **मल्हारराव होल्कर** के साथ मिलकर **गिरिधर बहादुर तथा दया बहादुर को पराजित** किया। इस युद्ध में मराठों की विजय ने मालवा में उनकी स्थिति को निर्णायक रूप से स्थापित कर दिया। इसी काल में मुहम्मद खां बंगश से संघर्ष भी हुआ, जिसमें बंगश की ओर से सेनापति **त्र्यंबकराव दाभाड़े डभोई के युद्ध में** पराजित हुये। अंततः बंगश को **मालवा तथा बुन्देलखण्ड में भी** पराजित होकर दिल्ली की ओर प्रस्थान करना पड़ा। इस प्रकार बाजीराव को मालवा में मुक्तहस्त कार्य करने का अवसर मिला।

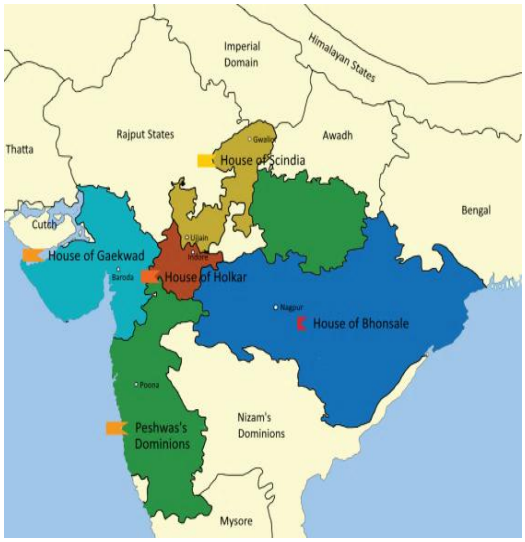

मध्यभारत में मराठा राज्य

CHAPTER

0

MCQs

1. खजुराहो में चतुर्भुज मंदिर का निर्माण किस चंदेल राजा ने करवाया? [Assistant professor 2024]
   (a) हर्षदेव
   (b) यशोवर्मन
   (c) धंग
   (d) विद्याधर

2. 'पत्थुवर्धन' जिसने गुर्जर प्रदेश जीता था किस वंश का शासक था? [Assistant professor 2022]
   (a) राजर्षितुल्य वंश
   (b) औलिकर वंश
   (c) वर्धन वंश
   (d) शैल वंश

3. प्राचीनकाल में 'दहाल' का क्षेत्र कहाँ पर स्थित था ? [Assistant professor 2022]
   (a) बैतूल
   (b) जबलपुर
   (c) खण्डवा
   (d) मंदसौर

4. परिव्राजक वंश किस जगह से संबंधित है? [Assistant Director Veterinary 2024]
   (a) बुंदेलखंड
   (b) बघेलखंड
   (c) निमाड़
   (d) मालवा

5. जेजाकभुक्ति के संस्थापक थे- [Assistant Director Veterinary 2024]
   (a) धंग
   (b) यशोधर्मन
   (c) हर्षदेव
   (d) नन्नुक

6. कालिदास कृत कुमारसंभव किस देवता को समर्पित है? [Assistant Director Veterinary 2024]
   (a) शिव-पार्वती
   (b) विष्णु-लक्ष्मी
   (c) ब्रह्मा-सरस्वती
   (d) राधा-कृष्ण

7. मालवा के परमार वंश के संस्थापक थे- [Assistant Director (Horticulture) 2023]
   (a) विजयसेन
   (b) चंद्रदेव
   (c) उपेन्द्र
   (d) जयसिंह

8. वाकाटक महाराज प्रवरसेन II का ताम्रदान पट्ट प्राप्त हुए- [Assistant Director (Horticulture) 2023]
   (a) देवबड़ला
   (b) सांची
   (c) बड़ोह
   (d) सिवनी

9. किस कल्चुरी नरेश को "उज्जयिनी भुजंग" भी कहा गया है? [Assistant Registrar Exam 2023]
   (a) कोक्कल I
   (b) शंकरगण II
   (c) गांगेयदेव
   (d) केयूरवर्ष (युवराजदेव I)

10. सास-बहू (सहस्रबाहु) के मंदिर का निर्माण कच्छपघात वंश के किस राजा ने करवाया था? [Assistant Registrar Exam 2023]
    (a) कीर्ति राज
    (b) महिपाल
    (c) मंगलपाल
    (d) भुवनपाल

11. खजुराहो स्मारक समूह, चंदेल वंश द्वारा किस काल में निर्मित किये गये थे? [Assistant Geologist Exam 2023]
    (a) 850-950 AD
    (b) 950-1050 AD
    (c) 1050-1150 AD
    (d) 1150-1250 AD

12. निम्नलिखित में से किस लेखक ने रानी दुर्गावती की राजधानी चौरागढ़ की लूट का वर्णन किया है ? [ADPO Exam 2021]
    (a) बरनी
    (b) अबुल फज़ल
    (c) फैज़ी
    (d) फिरंदौसी

13. मालवा के परमार वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक कौन था [Shakha/Sampada Prabandhak 2021]
    (a) मुंज
    (b) भोज
    (c) उपेंद्र
    (d) उदयादित्य

14. मध्य प्रदेश के किस संग्रहालय में 'शालभंजिका' की दुर्लभ प्रतिमा प्रदर्शित है ? [Shakha/Sampada Prabandhak 2021]
    (a) सप्रे संग्रहालय, भोपाल
    (b) परमार संग्रहालय, धार

(c) होशंग शाह का मकबरा
(d) रानी रूपमती का महल

80. किस वंश ने ओरछा को बुन्देलखण्ड की राजधानी बनाया था? [Veterinary Assistant Surgeon 2021]
(a) बुन्देल
(b) चन्देल
(c) मुगल
(d) सिन्धिया

81. सिंगोरगढ़ का किला मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है? [MP State Engineering Service 2021]
(a) सागर
(b) दमोह
(c) जबलपुर
(d) छतरपुर

82. महाराजा छत्रसाल की राजधानी थी? [Assistant Manager Exam 2021]
(a) सागर
(b) छतरपुर
(c) विदिशा
(d) पन्ना

83. पेशवा बाजीराव प्रथम की मृत्यु म.प्र. के नर्मदा तट पर निम्न स्थान पर हुई थी? [Assistant Manager Exam 2021]
(a) रावेर खेड़ी
(b) महेश्वर
(c) खलघाट
(d) जबलपुर

84. निम्नलिखित में से कौन बुन्देली लेखक नहीं है? [MP State Engineering Service 2020]
(a) जगनिक
(b) महाराज विश्वनाथ सिंह
(c) ईसुरी
(d) गंगाधर व्यास

85. अकबर के आक्रमण के समय असीरगढ़ दुर्ग किस वंश के अधिकार में था? [MP ITI Principal 2024]
(a) गोंड
(b) फ़ारूक़ी
(c) खिलजी
(d) परमार

86. प्रसिद्ध गोंड दुर्ग देवगढ़ किस जिले में स्थित है? [MP ITI Principal 2024]
(a) छिन्दवाड़ा
(b) सिवनी
(c) अनूपपुर
(d) सोहागपुर

87. गोंडकालीन प्रसिद्ध साहित्यिक ग्रन्थ गढेश नृपवर्णनम एवं रामविजय महाकाव्य के लेखक कौन थे? [MP ITI Principal 2024]
(a) हृदयशाह
(b) रूपनाथ झा
(c) वैद्यनाथ झा
(d) निजाम शाह

88. प्रसिद्ध हिण्डोला तोरण कहाँ स्थित है ? [MP State Forest Service Mains 2024]
(a) माण्डू
(b) सांची
(c) ग्यारसपुर
(d) भरहूत

89. 'आनन्द रघुनन्दन' नाटक के लेखक कौन है? [MP State Forest Service Mains 2024]
(a) रमेश नानवानी
(b) अनंत हर्ष
(c) विश्वनाथ सिंह
(d) अमृतलाल

90. मालवा के अंतिम परमार शासक महलकदेव को किस मुस्लिम शासक ने पराजित किया? [Assistant Research Officer 2024]
(a) अलाउद्दीन खिलजी
(b) इल्तुतमिश
(c) बलबन
(d) फिरोज तुग

Answer

1. b	2. d	3. b	4. a	5. d	6. a	7. c	8. d	9. d	10. b	11. b	12. b
13. b	14. d	15. b	16. a	17. b	18. c	19. b	20. a	21. c	22. a	23. c	24. a
25. a	26. a	27. a	28. c	29. a	30. b	31. c	32. d	33. b	34. d	35. b	36. d
37. a	38. a	39. d	40. c	41. d	42. b	43. a	44. a	45. a	46. c	47. b	48. c
49. a	50. a	51. c	52. a	53. d	54. b	55. a	56. d	57. d	58. d	59. b	60. a
61. c	62. a	63. d	64. c	65. c	66. a	67. c	68. d	69. b	70. d	71. a	72. c
73. b	74. d	75. d	76. c	77. a	78. d	79. c	80. a	81. b	82. d	83. a	84. b
85. b	86. a	87. b	88. c	89. c	90. a						

© Hornbill classes
+91 78802-71423
Hornbillclasses@gmail.com

INDIAN FOREST SERVICE (IFOS) 2023

Ritvika Pandey

Forestry Comprehensive Course

Swastic Yaduvanshi

Forestry Comprehensive Course

Vidyanshu Shekhar Jha

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Rohan Tiwari

Forestry Comprehensive Course

Shashank Bhardwaj

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Ankan Bohra

Forestry Comprehensive Course

Prachi Gupta

Forestry Comprehensive Course

Raj Patoliya

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Vineet Kumar

Forestry Comprehensive Course

Jatin Babu S

Forestry Comprehensive Course

Gaurav Saharan

Test Series

Yash Singhal

Forestry Comprehensive Course

Nitish Pratik

Forestry Comprehensive Course

Vaasanthi P.

Test Series

Sourabh Kumar Jat

Forestry Comprehensive Course

Ekam Singh

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Kunal Mishra

Forestry Comprehensive Course

Atul Tiwari

Forestry Comprehensive Course

Aman Gupta

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Sanket Adhao

Forestry Comprehensive Course

Preeti Yadav

Forestry Comprehensive Course

Nihal Chand

Forestry Comprehensive Course + Test Series

Shashikumar S. L.

Forestry Comprehensive Course

Dhino Purushothaman

Forestry Comprehensive Course

Diwakar Swaroop

Forestry Comprehensive Course

Rajesh Kumar

Forestry Comprehensive Course

Krishna Chaitanya

Forestry Comprehensive Course

Harveer Singh Jagarwar

Forestry Comprehensive Course

Akash Dhanaji Kadam

Forestry Comprehensive Course

Himanshu Dwivedi

Forestry Comprehensive Course

Sumit Dhayal

Forestry Comprehensive Course

Priyadarshini

Forestry Comprehensive Course + Test Series

64 Out of 147 Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2023

Congratulations

To all our successful candidates in

Kanika Anabh

Forestry Comprehensive Course | Test Series

Anubhav Singh

Forestry Comprehensive Course

Sanskar Vijay

Forestry Comprehensive Course

Satya Prakash

Test Series

Chada Nikhil Reddy

Forestry Comprehensive Course

Bipul Gupta

Forestry Comprehensive Course

Yeduguri Aiswarya Reddy

Forestry Comprehensive Course

Namratha N

Forestry Comprehensive Course

Divyanshu Pal Nagar

Forestry Comprehensive Course

Akanksha Puwar

Forestry Comprehensive Course

Yogesh Rajoriya

Forestry Comprehensive Course

G Prashanth

Forestry Comprehensive Course | Test Series

Kanishak Aggarwal

Forestry Comprehensive Course

Shashi Shekhar

Forestry Comprehensive Course

Vinay Budanur

Forestry Comprehensive Course

Shraddhesh Chandra

Forestry Comprehensive Course | Test Series

Kaore Shreerang Deepak

Forestry Comprehensive Course | Test Series

Javed Ahmad Khan

Forestry Comprehensive Course

Shruti Chaudhary

Forestry Comprehensive Course

Aravindkumar R

Forestry Comprehensive Course

Kishlay Jha

Forestry Comprehensive Course

Prabhutoshan Mishra

Forestry Comprehensive Course

Abhigyan Khaund

Forestry Comprehensive Course

52 Out of **143** Total Selections in

Indian Forest Service (IFoS) 2024

Online / Offline Batches

Comprehensive syllabus coverage and detailed analysis of PYQs

- Both online / Offline batches
- 2 years of validity with unlimited access.

Study Material

- PYQs and syllabus-based
- Color printed
- Generous use of visual Graphics
- Align with the latest trends and requirements of the exam

Test Series

Personalized feedback with detailed solutions and suggestions for each candidate, ensuring targeted improvement and success in exams.

Leader In Forest Services

A premier institute specializing in forest service exams, including IFoS, ACF, RFO, and ICFRE / ICAR–(ASRB) ARS/NET Examinations.